REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 7 | APRIL - 2025

टीकमगढ़ जिला में शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का भौगोलिक अध्ययन

प्रदीप कुमार बाल्मीक
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र
सहायक प्राध्यापक भूगोल
इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –

टीकमगढ़ जिला मध्य प्रदेश राज्य के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। जिले में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के संस्थान फैले हुए हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में इन संस्थानों की संख्या और गुणवत्ता में अंतर है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी कई विद्यालयों की स्थिति सुधारने की आवश्यकता है। सरकारी स्कूलों के अलावा, निजी स्कूलों की संख्या भी बढ़ रही है, लेकिन यह एक विशिष्ट आर्थिक वर्ग तक सीमित रहती है। स्वास्थ्य सेवाओं का वितरण जिले के विभिन्न हिस्सों में भिन्न है। शहरी क्षेत्रों में अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र अच्छी स्थिति में हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं की कमी है। सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या पर्याप्त है, लेकिन इनकी गुणवत्ता और चिकित्सा स्टाफ की उपलब्धता में सुधार की आवश्यकता है। जिले में कुछ प्रमुख सरकारी और निजी अस्पताल भी हैं, जो अधिक गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए सेवा प्रदान करते हैं, लेकिन इनकी पहुँच और सुविधा सीमित है।

मुख्य शब्द – टीकमगढ़, शैक्षणिक सुविधाएँ, स्वास्थ्य सुविधाएँ, शहरी और ग्रामीण क्षेत्र।

प्रस्तावना –

टीकमगढ़ जिला जो मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निरंतर विकास कर रहा है। हालाँकि, यह क्षेत्र अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े वर्गों में। जिले में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की संख्या पर्याप्त है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। सर्व शिक्षा अभियान और मध्यान्ह भोजन योजना से प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा मिला है। कुछ स्कूलों में स्मार्ट क्लास और ई–लर्निंग संसाधनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना के तहत जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

जिले में कुछ महाविद्यालय और व्यावसायिक शिक्षा संस्थान उपलब्ध हैं, लेकिन उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को बड़े शहरों (सागर, झांसी, भोपाल) की ओर रुख करना पड़ता है। आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) और पॉलिटेक्निक कॉलेज कौशल विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अनुसूचित जाति और

जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापकों की कमी और स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं (बिजली, शौचालय, पुस्तकालय) का अभाव है। लड़कियों की शिक्षा दर कम, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्गों में है। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के अवसर सीमित, जिससे युवा रोजगार के लिए बड़े शहरों में पलायन करते हैं।

जिले में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और आँगनवाड़ी केंद्रों की संख्या पर्याप्त है, लेकिन चिकित्सा सुविधाओं में सुधार की जरूरत है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा दिया गया है। टीकाकरण अभियान को मजबूत किया गया है, जिससे शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। टीकमगढ़ में एक जिला अस्पताल है, जहाँ सामान्य स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं। कुछ निजी अस्पताल और क्लीनिक भी मौजूद हैं, लेकिन विशेषज्ञ डॉक्टरों और आधुनिक उपकरणों की कमी है। आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीब परिवारों को मुफ्त चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की भारी कमी है। मलेरिया, डेंगू और कुपोषण जैसी बीमारियाँ अभी भी एक बड़ी समस्या है। गर्भवती महिलाओं और शिशुओं के लिए पोषण संबंधी सेवाओं की कमी है। स्वच्छ पेयजल और सैनिटेशन की समस्याएँ, जिससे जलजनित रोग फैलते हैं।

विश्लेषण –

टीकमगढ़ जिले में शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता और उनका भौगोलिक वितरण जिले के समग्र विकास में बाधक बनता है। शहरी और ग्रामीण इलाकों के बीच संसाधनों की कमी और सुविधाओं की असमानता को दूर करने के लिए सरकारी योजनाओं और नीतियों की आवश्यकता है। शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार से जिले की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। टीकमगढ़ जिला में शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का भौगोलिक अध्ययन का विश्लेषण निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित है :

1. शैक्षणिक सुविधाओं का भौगोलिक विश्लेषण : शहरी इलाकों में शिक्षा सुविधाओं का बेहतर विकास हुआ है, जहाँ सरकारी और निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, और विश्वविद्यालयों की संख्या अधिक है। यहाँ शैक्षणिक संसाधन भी बेहतर उपलब्ध हैं, जैसे पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला, और खेल सुविधाएँ। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा संस्थानों की कमी है। यहाँ विद्यालयों का भौगोलिक वितरण असमान है, जिससे बच्चों की शिक्षा तक पहुँच में कठिनाइयाँ आती हैं। कई ग्रामीण इलाकों में शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति इतनी खराब है कि यहाँ बच्चों के लिए बुनियादी सुविधाएँ जैसे शौचालय, पानी, और कक्षा की उचित व्यवस्था भी उपलब्ध नहीं है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता अपेक्षाकृत बेहतर है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, और शिक्षा सामग्री का अभाव प्रमुख समस्याएँ हैं। छात्रों के पास शिक्षा तक पहुँच की असमानता के कारण, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शिक्षा के स्तर में अंतर बढ़ता जा रहा है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। जबकि, निजी विद्यालयों की वृद्धि ने शहरी इलाकों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर किया है, लेकिन यह सुविधा केवल उच्च वर्ग के लिए सुलभ है।

2. स्वास्थ्य सुविधाओं का भौगोलिक विश्लेषण : टीकमगढ़ जिले में शहरी क्षेत्रों में अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों और क्लीनिकों की अच्छी संख्या है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी संख्या कम है। यहाँ पर स्वास्थ्य सेवाओं का भौगोलिक वितरण असमान है। शहरी क्षेत्रों में सरकारी अस्पतालों और निजी क्लीनिकों की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव है, जिससे लोगों को उचित इलाज मिलने में समस्याएँ आती हैं। जिले के ग्रामीण इलाकों में सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। इन केंद्रों में चिकित्सा सुविधाएँ, उपकरण और स्टाफ की कमी होती है। स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों की अनुपस्थिति और नर्सिंग स्टाफ की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। जिले में कुछ प्राइवेट अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र मौजूद हैं, लेकिन वे भी केवल शहरी इलाकों तक सीमित हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को इलाज के लिए दूर–दूर तक जाना पड़ता है। जिले में सामान्य बीमारियाँ जैसे मलेरिया, डेंगू, बुखार, कुपोषण और तपेदिक (टीबी) जैसी समस्याएँ आम हैं। इनका इलाज करने के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है। बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की समस्या भी प्रमुख है, जो क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति को और चुनौतीपूर्ण बनाती है।

3. आर्थिक और सामाजिक प्रभाव : शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता का सामाजिक और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इन सुविधाओं में सुधार किया जाए,

तो सामाजिक समानता को बढ़ावा मिलेगा और आर्थिक विकास की गति तेज होगी। एक स्वस्थ और शिक्षित जनसंख्या बेहतर कार्यक्षमता और विकास की दिशा में कदम बढ़ा सकती है, जिससे समाज और अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

शिक्षा क्षेत्र में, विद्यालयों की संख्या तो पर्याप्त है, लेकिन गुणवत्ता सुधार और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए ताकि युवाओं को रोजगार के अवसर मिल सकें। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के लिए डॉक्टरों की नियुक्ति, बेहतर उपकरण और मातृ–शिशु देखभाल सेवाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए ताकि शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँच सकें।

टीकमगढ़ जिले में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए शैक्षणिक संस्थाएं विद्यमान है। इन शैक्षणिक संस्थानों में जिले के समस्त जातियों के साथ अनुसूचित जाति के बच्चे भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अनुसूचित जाति के बच्चों को अध्ययन प्राप्त करने की सम्पूर्ण सुविधाएं शासन की ओर से उपलब्ध करायी जाती रही हैं। जिले में अनेक शिक्षण संस्थान है, जिनमें अनुसूचित जाति के बच्चों को शिक्षण सम्बन्धित अनेक सुविधाएं मुहैया करायी जा रही हैं। जिले के शैक्षणिक संस्थाओं में खेल–कूद की सामाग्री, पठन–पाठन की सामग्री और निःशुल्क पोषण आहार भी प्रदान किया जा रहा है। जिले में केन्द्रीय विद्यालय, मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, शासकीय उच्चतर महाविद्यालय, क्रमांक–2, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जतारा, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पलेरा, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इत्यादि शैक्षणिक संस्थाएं मौजूद है। इनके अलावा केन्द्र सरकार के पूर्ण साक्षरता अभियान के अन्तर्गत जिले में आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिले के अनुसूचित जाति के वयस्क व्यक्तियों को प्रौढ़ शिक्षा द्वारा शिक्षित किया जा रहा है। अतः टीकमगढ़ जिला प्रारम्भिक समय से ही शैक्षणिक केन्द्र रहा है।

टीकमगढ़ जिले में स्थापित शासकीय अस्पतालों में अनुसूचित जातियों के लिए निःशुल्क चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रही है। जिले के ग्रामीण अंचलों में स्थापित सामुदायिक चिकित्सालय में व्यक्तियों के उपचार की सम्पूर्ण सुविधाएं मौजूद है। इन शासकीय चिकित्सालयों में कार्ड के माध्यम से व्यक्तियों को आगामी 2 सालों तक निःशुल्क चिकित्सीय सेवाएँ मुहैया करायी जाती है। आवश्यकता पड़ने पर जन–मानस की सेवा के लिए एम्बुलेंस की सुविधा भी मुफ्त में उपलब्ध करायी जाती है। जिलें में जच्चा–बच्चा शिविर, भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित पल्स पोलियों शिविर में भी समस्त जिले के ग्रामीण अंचलों में नसबंदी शिविर भी लगाये जाते हैं और इनके द्वारा समय–समय पर प्राथमिक पाठशाला के बच्चों का प्राथमिकी चेकअप भी निःशुल्क में करायी जाती है, जो व्यक्तियों के जीवन के स्वास्थ्य के प्रति काफी सराहनीय कदम है। मानव जीवन के स्वास्थ्य को रोगमुक्त बनाने हेतु इन शासकीय अस्पतालों में सभी कार्य जन सेवा की भावना की दृष्टि से निःशुल्क में किया जा रहा है।

टीकमगढ़ जिले में इनके आलावा शासन के माध्यम से व्यक्तियों की सेवा करने की दृष्टि से एलोपैथिक सेवाएं, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और उपस्वास्थ्य केन्द्र, आयुर्वेद व होम्योपैथोलोजी स्थापित किया गया है, जिसमें जिले के ग्रामीण एवं नगरीय व्यक्तियों के स्वास्थ्य की अच्छी तरह से देखभाल किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के इन स्वास्थ्य केन्द्रों में मानव जीवन को सुखमय बनाने का यथासम्भव प्रयास किया जा रहा है।

अतः अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जाति क्षेत्रों के विकास योजनाएँ तथा सामाजिक व आर्थिक दृष्टिकोण से उनके शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था होने व न होने का वास्तविक आकलन करने के लिए प्राथमिक स्तर पर अध्ययन क्षेत्र की तहसीलों से चयनित किये गये व्यक्तियों से सर्वेक्षण का कार्य करते समय साक्षत्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से एकत्रित किये गये समंको की वर्गीकरण के साथ सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक व्याख्या की गयी है–

सारणी क्रमांक–1
अध्ययन क्षेत्र में शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	समुचित व्यवस्था है	197	65.67
2.	समुचित व्यवस्था नहीं है	75	25.00
3.	कुछ कह नहीं सकते	28	9.33

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उक्त सारणी के समंकों से स्पष्ट होता है कि यह अध्ययन क्षेत्र में शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा चयन किये गये कुल 300 उत्तरदाताओं में 197 उत्तरदाताओं ने बतलाया कि शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था है, जिनके प्रतिशत 65.67 है, 75 उत्तरदाताओं ने बतलाया कि जिलों में शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था नहीं है, जिनके प्रतिशत 25.00 है और 28 उत्तरदाताओं ने बतलाया कि इसके सम्बन्ध में कुछ कह नहीं सकते, जिनके प्रतिशत 9.33 है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि टीकमगढ़ जिले से चयन किये गये सबसे अधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अध्ययन क्षेत्र में शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था है। जिले में इन सुविधाओं के होने से अनुसूचित जाति के सदस्यों को शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं हेतु अन्य जिलों/दूर–दराज क्षेत्रों में नही जाना पड़ता है।

टीकमगढ़ जिले की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ धीरे–धीरे विकसित हो रही हैं, लेकिन अब भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। जिले में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा संस्थान मौजूद हैं, परंतु शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षकों की कमी, और बुनियादी सुविधाओं की अनुपलब्धता अभी भी समस्या बनी हुई है। लड़कियों की शिक्षा और तकनीकी/व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हो सकें। स्वास्थ्य क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की गई है, लेकिन डॉक्टरों, चिकित्सा उपकरणों और विशेषज्ञ सेवाओं की कमी से लोग प्रभावी इलाज से वंचित रह जाते हैं। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और जलजनित रोगों से निपटने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को और सशक्त करने की जरूरत है। शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए, डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए और व्यावसायिक शिक्षा केंद्रों की स्थापना की जाए। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए डॉक्टरों की नियुक्ति, आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए। सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन कर वंचित वर्गों तक शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित की जाए। टीकमगढ़ जिले में शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों ही क्षेत्रों में व्यापक सुधार की आवश्यकता है ताकि सामाजिक और आर्थिक विकास को गति मिल सके।

निष्कर्षः

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिले में शैक्षणिक और स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। यदि इन सुविधाओं का भौगोलिक वितरण और गुणवत्ता में सुधार किया जाए, तो यह जिले की समग्र सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बेहतर बना सकता है। जिले में शैक्षणिक संस्थानों की संख्या बढ़ी है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच में सुधार की आवश्यकता है। विद्यालयों की कमी और संसाधनों की कमी के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शिक्षा का अंतर बना हुआ है। अधिक शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता है, साथ ही शिक्षकों की ट्रेनिंग और संसाधनों में सुधार की जरूरत है। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएँ बेहतर हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की कमी और डॉक्टरों की अनुपस्थिति समस्या बनी हुई है। सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में संसाधनों की कमी है, जिससे इलाज में दिक्कतें आती हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को बेहतर बनाने के लिए अधिक स्वास्थ्य केंद्रों की आवश्यकता है, और चिकित्सा सुविधाओं का वितरण समान रूप से किया जाना चाहिए।

संदर्भ –

1. कुमार, प्रमिला (1982), म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
2. नेगी, वी.एस. (1980), संसाधन भूगोल, केदारनाथ रामनाथ, 132, कालेज रोड, मेरठ
3. मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज और जैन, प्रो. एस.एम. (1999), यूनीफाइड भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन
4. सिंह, अमरनाथ एवं मेंहदीरजा (1982), संसाधन संरक्षण भूगोल, प्रगति प्रकाशन, मेरठ
5. कुरुक्षेत्र (अक्टूबर 2002), ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सेवायें, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
6. कस्वाँ, एन.आर. (2003), मानव एवं पर्यावरण, मलिक एण्ड कम्पनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर
7. भारत में ग्रामीण विकास समस्याएँ एवं ब्यूह रचना, शोध पत्रिका, अर्थशास्त्र विभाग, सीधी, 1997.